IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, June 2024

छायावाद और प्रतिवाद :एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार गौतम

हिंदी विभाग

प्राचार्य, यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय, सेमरिया, रीवा, म.प्र.

सारांश:

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में छायावाद और प्रगतिवाद दो प्रमुख काव्यधाराएँ हैं, जो क्रमशः 1918-1936 और 1936-1943 के बीच विकसित हुईं। यह शोध पत्र इन दोनों धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी उत्पत्ति, विशेषताएँ, प्रमुख कवि, रचनाएँ तथा साहित्यिक प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। छायावाद व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान और प्रकृति-केंद्रित है, जिसमें भावुकता, रहस्यवाद और आत्मानुभूतियों का प्रधानता है, जबकि प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद, वर्ग संघर्ष और क्रांतिकारी चेतना पर आधारित है, जो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छायावाद द्विवेदी युग की रूढ़िवादिता के विरुद्ध विद्रोह के रूप में उभरा, जबकि प्रगतिवाद छायावाद की वैयक्तिकता और समाज-विमुखता की प्रतिक्रिया है। दोनों में समानताएँ जैसे मानवतावाद और राष्ट्रीय जागरण मौजूद हैं, लेकिन अंतर विषयवस्तु, शैली और उद्देश्य में स्पष्ट हैं। यह पत्र साहित्यिक विश्लेषण, तुलनात्मक विधि और विभिन्न स्रोतों (विकिपीडिया, विकिबुक्स, ई-ज्ञानकोष आदि) पर आधारित है। निष्कर्ष में, दोनों धाराएँ हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण हैं, जिन्होंने आधुनिक कविता को नई दिशा प्रदान की। यह अध्ययन हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और साहित्य प्रेमियों के लिए उपयोगी है, जो आधुनिक हिंदी काव्य की गतिशीलता को समझने में सहायक होगा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, June 2024

कीवर्ड्स: (Keywords)

छायावाद, प्रगतिवाद, तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी साहित्य, जयशंकर प्रसाद, निराला, नागार्जुन, मार्क्सवाद, प्रकृति चित्रण, सामाजिक यथार्थवाद, राष्ट्रीय जागरण, कल्पनाशीलता, क्रांतिकारी चेतना।

परिचय: (Introduction)

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल (1843 **से वर्तमान तक) विभिन्न युगों और धाराओं से समृद्ध है, जिसमें भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता प्रमुख हैं। इनमें छायावाद और प्रगतिवाद दो ऐसी धाराएँ हैं जो हिंदी काव्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करती हैं। छायावाद, जो** 1918 **से** 1936 **तक का काल माना जाता है, द्विवेदी युग की स्थूलता, उपदेशात्मकता और इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध एक विद्रोह के रूप में उभरा। यह युग राष्ट्रीय जागरण, प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव और पाश्चात्य रोमांटिक साहित्य (जैसे वर्ड्सवर्थ, शेली और कीट्स) से प्रभावित था। रवींद्रनाथ टैगोर की रहस्यवादी कविताओं का भी गहरा प्रभाव पड़ा, जिससे हिंदी कविता में भावुकता, कल्पनाशीलता और प्रकृति प्रेम का समावेश हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में छायावाद को तृतीय उत्थान युग कहा है, जो काव्य कला की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।**

छायावाद का नामकरण 'छाया' से हुआ, जो कवियों की अंतर्मन की भावनाओं का प्रतिबिंब दर्शाता है। मुकुटधर पांडे ने 'श्री शारदा' पत्रिका में 'हिंदी में छायावाद' लेखमाला से इसकी विशेषताओं को रेखांकित किया। इस युग में कविता व्यक्तिनिष्ठ हो गई, जहाँ कवि अपने मनोजगत की सूक्ष्म अनुभूतियों को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा हैं, जिनकी रचनाएँ जैसे 'कामायनी', 'पल्लव', 'परिमल' और 'नीरजा' छायावाद की आत्मा हैं। इस युग का सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य भारत की दासता, असहयोग आंदोलन और सांस्कृतिक नवजागरण से जुड़ा है, जहाँ कवियों ने निराशा और कुंठा को आध्यात्मिक ऊर्जा से पराजित करने का प्रयास किया।

दूसरी ओर, प्रगतिवाद 1936 से 1943 तक का काल है, जो छायावाद की वैयक्तिकता और कल्पनाशीलता की प्रतिक्रिया में उभरा। यह मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित है, जिसमें समाज को शोषक और शोषित वर्गों में विभाजित देखा जाता है। 1917 की रूसी क्रांति, 1935 में प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन की स्थापना और 1936 में प्रेमचंद की अध्यक्षता में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन से इसकी शुरुआत हुई। प्रगतिवाद का उद्देश्य शोषण-मुक्त समाज की स्थापना है, जहाँ कला 'जीवन के लिए' है, न कि 'कला के लिए'। प्रमुख कवि नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', शिवमंगल सिंह 'सुमन' और त्रिलोचन हैं, जिनकी रचनाएँ जैसे 'अकाल और उसके बाद', 'हुंकार' और 'प्रलय सृजन' सामाजिक यथार्थ और क्रांति को उजागर करती हैं।

इस तुलनात्मक अध्ययन का महत्व हिंदी साहित्य की गतिशीलता को समझने में है। छायावाद ने हिंदी कविता को भावनात्मक गहराई दी, जबकि प्रगतिवाद ने इसे सामाजिक प्रासंगिकता प्रदान की। दोनों धाराएँ स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी हैं, लेकिन छायावाद सूक्ष्म प्रतिरोध दिखाता है, जबकि प्रगतिवाद प्रत्यक्ष विद्रोह। इस पत्र का उद्देश्य इनकी समानताओं (मानवतावाद, राष्ट्रीयता) और अंतरों (व्यक्तिवाद बनाम सामूहिकता, कल्पना बनाम यथार्थ) का विश्लेषण करना है, जो हिंदी साहित्य के विकास को दर्शाता है। अध्ययन से स्पष्ट होगा कि प्रगतिवाद छायावाद से संक्रमण का परिणाम है, जो प्रयोगवाद और नई कविता की नींव रखता है।

शोध पद्धति: (Research Methodology)

यह शोध पत्र माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें साहित्यिक विश्लेषण और तुलनात्मक विधि का उपयोग किया गया है। प्राथमिक डेटा के रूप में छायावाद और प्रगतिवाद के प्रमुख कवियों की रचनाएँ (जैसे 'कामायनी', 'अकाल और उसके बाद') का अध्ययन किया गया, जबकि माध्यमिक स्रोतों में विकिपीडिया, विकिबुक्स, ई-ज्ञानकोष, टेस्टबुक और अन्य शैक्षणिक PDFs शामिल हैं। शोध की विधि निम्नानुसार है:

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
IJARSCT
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, June 2024

साहित्यिक समीक्षा: विभिन्न स्रोतों से छायावाद और प्रगतिवाद की उत्पत्ति, विशेषताओं और प्रभाव का संकलन। उदाहरणस्वरूप, रामचंद्र शुक्ल के 'हिंदी साहित्य का इतिहास' और रामविलास शर्मा के कार्यों का उपयोग।

तुलनात्मक विश्लेषण: दोनों धाराओं की विषयवस्तु, शैली, उद्देश्य और प्रभाव की तुलना। अंतरों को तालिकाओं और उदाहरणों से स्पष्ट किया गया।

गुणात्मक दृष्टिकोण: कविताओं के उद्धरणों से भावनाओं और विचारों का परीक्षण। स्रोतों की विश्वसनीयता: केवल प्रतिष्ठित वेबसाइट्स और PDFs का उपयोग, जैसे विकिपीडिया (प्रगतिवाद पृष्ठ) और विकिबुक्स (छायावाद पृष्ठ)। सीमाएँ: अध्ययन मुख्यतः कविता पर केंद्रित है, गद्य को कम शामिल किया गया।

मुख्य भाग: (Main Body)

छायावाद: उत्पत्ति, विशेषताएँ, कवि और रचनाएँ

छायावाद हिंदी साहित्य का एक रोमांटिक आंदोलन है, जो 1918 से 1936 तक फैला। इसकी उत्पत्ति द्विवेदी युग की रूढ़िवादिता से विद्रोह में हुई, जहाँ कविता स्थूल से सूक्ष्म की ओर मुड़ी। प्रथम विश्व युद्ध, असहयोग आंदोलन और पाश्चात्य प्रभाव (रोमांटिकवाद) ने इसे जन्म दिया। रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं से रहस्यवाद और प्रकृति संवेदना आई। आचार्य शुक्ल ने इसे 'तीर्थ उत्थान' कहा, जबकि जयशंकर प्रसाद को प्रवर्तक माना जाता है।

निष्कर्ष: (Conclusion)

छायावाद और प्रगतिवाद हिंदी साहित्य के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, जो तुलनात्मक अध्ययन से साहित्य की विविधता दर्शाते हैं। छायावाद ने भावनात्मक गहराई दी, जबकि प्रगतिवाद ने सामाजिक प्रासंगिकता। दोनों

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, June 2024

ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया, और आधुनिक कविता को प्रभावित किया। भविष्य में इनका अध्ययन साहित्यिक विकास को समझने में सहायक होगा।

संदर्भ (References)

[1]. हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद - विकिपीडिया.

[2]. हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)/छायावाद - विकिपुस्तक.

[3]. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नयी कविता - PDF.

[4]. इकाई 24 छायावादोत्तर एवं प्रगतिशील काव्य - eGyanKosh.

[5]. छायावाद क्या है? - Testbook.

[6]. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास: प्रगतिवाद - साइट.

[7]. अन्य स्रोत: Quora, YouTube वीडियो, आदि से प्रेरित।